

मध्य प्रदेश में प्रागैतहासिक कलाकृतियाँ मर्लीं

चर्चा में क्यों?

हाल ही में मध्य प्रदेश स्थिति [घुघवा राष्ट्रीय जीवाश्म उद्यान](#) में एक खोज की गई, जहाँ [बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान और टाइगर रज़िर्व](#) में अनुसंधान कर रहे सोनीपत स्थिति [अशोका विश्वविद्यालय के पुरातत्त्वविदों](#) के एक दल को जीवाश्म काष्ठ से बनी प्रागैतहासिक कलाकृतियाँ मर्लीं।

मुख्य बदि:

- यह खोज दर्शाती है कि [प्रागैतहासिक चलवासी लोग पेड़ के लट्टों](#) को अपने औजारों और वस्तुओं को बनाने के लिये संसाधन के रूप में उपयोग करते थे।
- [जीवाश्म लकड़ी/काष्ठ से बने औजार भारत में आम नहीं हैं](#) तथा ये काफी [दुर्लभ](#) हैं, केवल [तमलिनाडु, राजस्थान और त्रपुरा](#) में ही इनके कुछ उदाहरण पाए जाते हैं।
 - हालाँकि घुघवा में खोजी गई कलाकृतियों की आयु अनश्चिति बनी हुई है, लेकिन शोधकर्त्ताओं का अनुमान है कि वे कम-से-कम 10,000 वर्ष पुरानी हैं।
 - इन कलाकृतियों में मध्यम आकार के टुकड़े शामिल थे जिनकी लंबाई लगभग पाँच सेमी. थी।
 - इसके अतिरिक्त, आस-पास के क्षेत्र में लगभग दो सेमी. लंबे कुछ [माइक्रोलाथि](#) भी पाए गए।
- मध्य प्रदेश में कई प्राचीन स्थल हैं जैसे भीमबेटका, जो [संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन \(यूनेस्को\)](#) का विश्व धरोहर स्थल है, हथनोरा (जहाँ नर्मदा बेसनि से जीवाश्म हड्डियों के रूप में एक महिला की खोपड़ी का टुकड़ा पाया गया था) इसके अलावा [नीमटोन, पलिकिर और महादेव पपिरिया](#) जैसे स्थल भी हैं।
 - इन क्षेत्रों में मुख्य रूप से [क्वार्टज़ाइट, चर्ट और बलुआ पत्थर](#) जैसी सामग्रियों से बने उपकरण पाए गए हैं।
- हालाँकि, जीवाश्म उद्यान में हाल ही में हुई खोज से पता चलता है कि [हमारे पूर्वज भी जीवाश्म लकड़ी का उपयोग करते थे](#), जो यह दर्शाता है कि वे केवल पत्थर के संसाधनों पर निर्भर नहीं थे।

घुघवा राष्ट्रीय जीवाश्म

- यह [डडिोरी](#) से 70 किलोमीटर दूर [घुघवा गाँव में स्थिति](#) है।
- यह 75 एकड़ भूमि के क्षेत्र में बसा हुआ है, जहाँ पत्तियों और पेड़ों के रोचक एवं दुर्लभ जीवाश्म की खोज जारी है।
- स राष्ट्रीय उद्यान में [पादप जीवाश्म रूप में](#) हैं जो भारत में लगभग 40 मिलियन से 150 मिलियन वर्ष पूर्व मौजूद थे।

बांधवगढ़ टाइगर रज़िर्व



//

- **परिचय:** वर्ष 1968 में इसे राष्ट्रीय उद्यान के रूप में अधिसूचित किया गया तथा वर्ष 1993 में पड़ोसी पनपथा अभयारण्य में [प्रोजेक्ट टाइगर](#) नेटवर्क के तहत इसे बाघ अभयारण्य घोषित किया गया।
- **भौगोलिक पहलू:** यह मध्य प्रदेश की सुदूर उत्तर-पूर्वी सीमा और सतपुड़ा पर्वत शृंखला के उत्तरी किनारे पर स्थित है।
- **जलवायु:** उष्णकटिबंधीय मानसूनी जलवायु क्षेत्र।
- **जैवविविधता:** मुख्य भूमि में बाघों की संख्या बहुत अधिक है। यहाँ सतनधारियों की 22 से अधिक प्रजातियाँ और पक्षियों की 250 से अधिक प्रजातियाँ हैं।
 - **उपस्थित प्रजातियाँ:** एशियाई सियार, बंगाल फॉक्स, स्लॉथ बयिर, स्ट्राइप्ड हायना, तेंदुआ और बाघ, जंगली सूअर, नीलगाय, चकिरा तथा गौर (एकमात्र शाकाहारी)।